गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 153
दि. 02.10.2025,
गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2025: भारत में 1687 अमीर हस्तियों की संपत्ति 167 लाख करोड़, अंबानी सबसे आगे

(जीएनएस)।

मुंबई में जारी हुई हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2025 ने एक बार फिर यह साफ कर दिया है कि भारत की अर्थव्यवस्था और कारोबारियों की संपत्ति कितनी तेज़ी से बढ़ रही है। इस बार की लिस्ट में 1,687 भारतीय शामिल हुए हैं, जिनकी संपत्ति 1,000 करोड़ रुपए से अधिक है। सभी की कुल नेटवर्थ 167 लाख करोड़ रुपए आँकी गई है, जो अपने आप में चौंकाने वाली है और भारत की कुल जीडीपी का लगभग आधा हिस्सा है। सबसे ऊपर एक बार फिर मुकेश अंबानी का परिवार है, जिसकी नेटवर्थ 9.55 लाख करोड़ रुपए बताई गई है। उनके ठीक बाद गौतम अडाणी और परिवार हैं, जिनकी कुल संपत्ति 8.15 लाख करोड़ रुपए है। वहीं, एचसीएल की चेयरपर्सन रोशनी नादर मल्होत्रा इस बार की लिस्ट में भारत की सबसे अमीर महिला बनी हैं।

युवाओं में भी इस बार रिकॉर्ड कायम हुआ है। 22 साल के

कैवल्य वोहरा, जो क्विक कॉमर्स स्टार्टअप Zepto के को-फाउंडर हैं, सबसे कम उम्र के अमीर बने हैं। उनके पास 4,480 करोड़ की संपत्ति है। उनके पार्टनर आदित पालिचा, उम्र 23 साल, भी इस लिस्ट में दूसरे सबसे कम उम्र के अरबपति बने। मनोरंजन जगत से भी बड़ा सरप्राइज सामने आया है। बॉलीवुड अभिनेता शाहरुख खान इस बार पहली बार अरबपति की श्रेणी में आए हैं। उनकी कुल संपत्ति 12,490 करोड़ रुपए आँकी गई है। इसके अलावा पेटीएम के संस्थापक विजय शेखर शर्मा फिर से अरबपति बने हैं, जबकि परप्लेक्सिटी AI के फाउंडर अरविंद श्रीनिवास 21,190 करोड़ रुपए की संपत्ति के साथ भारत के सबसे कम उम्र (31 वर्ष) के अरबपति बने।

में कुल 284 नए नाम शामिल हुए हैं। इस बार अरबपतियों की संख्या 350 के पार हो चुकी है, जबकि 13 साल पहले जब यह लिस्ट पहली बार बनाई गई थी, तब यह संख्या बहुत कम थी।

गौरतलब है कि हुरुन रिपोर्ट का शुभारंभ 1999 में ब्रिटिश बिजनेसमैन रूपर्ट हूगेवर्फ ने लंदन से किया था। शुरू में यह केवल चीन के अमीरों पर केंद्रित थी, लेकिन 2012 से भारत के लिए भी यह लिस्ट प्रकाशित होने लगी। भारत में इसे अनास रहमान जुनैद लीड करते हैं। वहीं, M3M इंडिया, जो गुरुग्राम स्थित एक प्रमुख रियल एस्टेट कंपनी है, इसके साथ मिलकर हर साल यह रिपोर्ट जारी करता है।

यह लिस्ट न केवल भारत की आर्थिक प्रगति का आईना है, बल्कि यह भी दिखाती है कि नए स्टार्टअप्स, तकनीक और उद्यमिता के बल पर भारत में धन और सफलता की कहानियाँ कितनी तेजी से लिखी जा रही हैं।

अगर शहरवार लिस्ट देखें तो मुंबई इस मामले में सबसे आगे है। इस शहर से कुल 451 लोग शामिल हुए हैं, जबकि दिल्ली से 223 और बेंगलुरु से 116 लोग जगह बनाने में सफल हुए। इस बार कुल 101 महिलाएं भी इस सूची में शामिल हुई हैं, जो भारतीय कारोबारी जगत में महिलाओं की बढ़ती हिस्सेदारी और प्रभाव को दर्शाता है। लिस्ट

गाजा में फिर मौत का मंजर, इजरायली हमले में 16 निर्दोषों की जान गई

(जीएनएस)।

गाजा में एक बार फिर हिंसा और खून-खराबे का सिलसिला तेज हो गया है। बुधवार को इजरायली सेना ने कई इलाकों में भीषण हमले किए, जिनमें कम से कम 16 फलस्तीनी नागरिकों की मौत हो गई। स्थानीय अस्पताल प्रशासन ने पुष्टि की कि मरने वालों में वे लोग भी शामिल हैं, जिन्होंने अपनी जान बचाने के लिए गाजा शहर के

अल-फलाह स्कूल में शरण ले रखी थी। लेकिन जिस जगह को सुरक्षित पनाहगाह समझा गया था, वह भी मौत का अड्डा बन गई। अल-अहली अस्पताल ने बताया कि पूर्वी जितून इलाके में अल-फलाह स्कूल के पास दो बड़े धमाके हुए। इन धमाकों के बाद जो लोग मदद के लिए दौड़े, वे भी अगले हमलों का शिकार बन गए।

गाजा शहर के पश्चिम में एक पेयजल टैंक के पास पांच लोगों की मौत हुई, वहीं एक अपार्टमेंट पर किए गए हमले में एक और नागरिक की जान चली गई। इतना ही नहीं, नुसरत और बुरेज़ शरणार्थी शिविरों पर भी बमबारी हुई, जहां दर्जनों लोगों की मौत और घायल होने की खबरें सामने आईं। हर तरफ तबाही का मंजर है और लोग अपने परिजनों की लाशों को मलबे से निकालने को मजबूर हैं।

पत्रकारों के लिए भी गाजा मौत का मैदान बन चुका है। पत्रकारों की सुरक्षा समिति (सीपीजे) के मुताबिक, 7 अक्टूबर 2023 को हमास के हमलों के बाद से अब तक 200 से ज्यादा पत्रकार मारे जा चुके हैं। वहीं गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इजरायली अभियान में अब तक 66,000 से अधिक फलस्तीनी अपनी जान गंवा चुके हैं और करीब 1,70,000 घायल हुए हैं। मरने वालों में लगभग आधे महिलाएं और बच्चे हैं, लेकिन मंत्रालय यह अलग नहीं कर पाता कि इनमें कितने नागरिक हैं और कितने उग्रवादी।

इस भीषण दौर में गाजा के लोगों की पीड़ा कल्पना से परे है। कहीं रोते-बिलखते बच्चे हैं तो कहीं मलबे में दबे परिवार। जिन घरों को लोग सपनों का आशियाना समझते थे, वे अब खंडहरों में बदल चुके हैं। राहत और सुरक्षा की उम्मीद किए लोग खुद हमलों का निशाना बन रहे हैं। गाजा एक जिंदा कब्रगाह बन गया है, जहां हर नया दिन सिर्फ मौत और तबाही का पैगाम लेकर आता है।

दोहा में बनेगा एम.एफ. हुसैन का अनोखा संग्रहालय, दिखेगी उनकी अंतिम कृति

(जीएनएस)।

नई दिल्ली से मिली जानकारी के अनुसार मशहूर चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन को समर्पित दुनिया का पहला संग्रहालय जल्द ही कतर में खुलेगा। 'लॉह वा कलामः एम.एफ. हुसैन संग्रहालय' नाम से यह संग्रहालय 28 नवंबर को दोहा में आम जनता के लिए खोला जाएगा। इसमें हुसैन के जीवन, उनकी कलाकृतियों और उनके गहन दर्शन को प्रस्तुत किया जाएगा। संग्रहालय की सबसे खास पेशकश होगी उनकी अंतिम और अनूठी रचना 'सीरू फी अल अर्द', जिसे 20 मिनट के शो के रूप में प्रदर्शित किया जाएगा। इस शो के माध्यम से दर्शकों को उनके कला दृष्टिकोण और जीवन-दर्शन की झलक मिलेगी। कतर फाउंडेशन से जुड़े खोलूद एम. अल-अली ने बताया कि यह संग्रहालय 1950 के दशक से लेकर 2011 में हुसैन के निधन तक की उनकी पूरी कलात्मक यात्रा को समेटेगा। इसे न केवल कला प्रेमियों बल्कि आम दर्शकों के लिए भी प्रेरणादायक स्थल के रूप में तैयार किया गया है। एम.एफ. हुसैन को भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में उनकी विशिष्ट चित्रकला शैली और साहसी कलात्मक प्रयोगों के लिए जाना जाता है। उनका यह संग्रहालय कला जगत में एक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण कदम साबित होगा, जहां लोग उनके कार्यों के साथ-साथ उनके जीवन के विभिन्न आयामों को भी नजदीक से देख पाएंगे।

बालोद बना देश का पहला बाल विवाह मुक्त जिला, छत्तीसगढ़ ने रचा इतिहास

(जीएनएस)।

छत्तीसगढ़ के बालोद जिले ने देश के सामने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। यह जिला अब भारत का पहला ऐसा जिला बन गया है जिसे आधिकारिक तौर पर बाल विवाह मुक्त जिला घोषित किया गया है। यह उपलब्धि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 27 अगस्त 2024 को शुरू किए गए बाल विवाह मुक्त भारत राष्ट्रीय अभियान के अंतर्गत हासिल की गई है। जिले के अधिकारियों ने जानकारी दी कि बालोद की सभी 436 ग्राम पंचायतों और नौ नगरीय निकायों को विधिवत प्रमाणपत्र जारी कर दिया गया है। बीते दो वर्षों में जिले से बाल विवाह का कोई भी मामला सामने नहीं आया, जो इस अभियान की बड़ी सफलता को दर्शाता है। सभी दस्तावेजों के सत्यापन और विधिक प्रक्रिया पूरी होने के बाद आधिकारिक तौर पर इस जिले को बाल विवाह मुक्त का दर्जा दे दिया गया है।

बालोद की यह ऐतिहासिक उपलब्धि अब पूरे देश के लिए एक आदर्श मॉडल बन गई है। यह दिखाता है कि जब प्रशासन, समाज और जनप्रतिनिधि मिलकर एकजुट होकर काम करते हैं, तो सामाजिक कुरीतियों को समाप्त किया जा सकता है। बालोद की कलेक्टर दिव्या उमेश मिश्रा ने बताया कि इस सफलता के पीछे प्रशासनिक अमले के साथ-साथ आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों और पूरे समुदाय की सामूहिक भागीदारी रही है। उन्होंने कहा कि सभी ने मिलकर इस दिशा में काम किया और बाल विवाह जैसी गहरी जड़ें जमाए सामाजिक बुराई को पूरी तरह समाप्त करने में कामयाबी हासिल की। आज जब देशभर में बाल विवाह की रोकथाम को लेकर लगातार प्रयास किए जा रहे हैं, तब बालोद की यह उपलब्धि अन्य जिलों और राज्यों को भी प्रेरित करेगी। यह केवल एक प्रमाणपत्र नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक क्रांति का प्रतीक है, जो आने वाली पीढ़ियों को स्वस्थ, शिक्षित और सशक्त बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

गुजरात की अदालत ने सुनाई सख्त सजा, राष्ट्र-विरोधी षड्यंत्र में तीन दोषियों को ताउम्र कैद

(जीएनएस)। राजकोट में बुधवार को देशविरोधी गतिविधियों में लिप्त तीन युवकों को अदालत ने कड़ी सजा सुनाई। पश्चिम बंगाल के रहने वाले अमन सिराज मलिक (23), अब्दुल शकूर अली शेख (20) और शफनवाज अबू शाहिद (23) को राजकोट की एक सत्र अदालत ने दोषी करार देते हुए उम्रकैद की सजा सुनाई है। अदालत ने यह भी आदेश दिया कि तीनों आरोपी अपनी आखिरी सांस तक जेल में रहेंगे और उन पर 10,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया गया है। अभियोजन पक्ष की ओर से जिला सरकारी वकील एस. के. वोरा ने बताया कि अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश आई. बी. पठान ने यह फैसला सुनाया। तीनों को युवाओं को कट्टरपंथ की राह पर धकेलने, जिहादी विचारधारा फैलाने और सरकार के खिलाफ षड्यंत्र रचने का दोषी पाया गया। गुजरात एटीएस ने जुलाई 2023 में इन तीनों को गिरफ्तार किया था। जांच में सामने आया कि वे राजकोट के सोनी बाजार स्थित एक नकली आभूषण कारखाने में कारीगर के तौर पर काम करते थे। इसी दौरान वे एक स्थानीय मस्जिद से राष्ट्र-विरोधी जिहादी प्रचार कर रहे थे और आतंकवादी संगठन अल-कायदा के लिए युवाओं की भर्ती में लगे थे। बताया जाता है कि वे एक बांग्लादेशी हैंडलर के संपर्क में थे और उसके लिए काम कर रहे थे। एटीएस की टीम ने उनमें से दो को राजकोट रेलवे स्टेशन से और तीसरे आरोपी को शहर के एक भवन से गिरफ्तार किया था। अदालत में पेश सबूतों और गवाही के आधार पर यह साबित हो गया कि आरोपी देश के खिलाफ साजिश रच रहे थे। अदालत का यह फैसला न केवल इन तीन युवकों के लिए सख्त संदेश है, बल्कि उन सभी के लिए चेतावनी भी है जो राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में शामिल होकर देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करने की कोशिश करते हैं।

विजयादशमी की महागाथा: भीतर और बाहर के रावण पर विजय

भारत की सांस्कृतिक धरोहर में विजयादशमी का पर्व एक ऐसा दीपस्तंभ है जो केवल परंपरा नहीं, बल्कि जीवन दर्शन है। जब-जब यह पर्व आता है, तो यह हमें अतीत की अमर कथाओं से जोड़कर यह स्मरण कराता है कि अधर्म कितना ही शक्तिशाली क्यों न लगे, उसका अंत निश्चित है और धर्म की स्थापना अपरिहार्य है।

प्राचीन काल की कथा हमें अयोध्या नगरी के उस महायुद्ध की याद दिलाती है, जब मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने समुद्र पार कर लंका पर चढ़ाई की थी। एक ओर धर्म, सत्य, करुणा और मर्यादा के प्रतीक श्रीराम थे, तो दूसरी ओर अहंकार, वासना, छल और अन्याय का प्रतिनिधि रावण। यह युद्ध केवल दो पुरुषों के बीच नहीं था, यह उन दो विचारधाराओं का संघर्ष था जिनमें से एक सदा मानवता को ऊँचाई पर ले जाती है और दूसरी विनाश की ओर। जब अंततः दशहरे के दिन रावण अपने दसों सिरों के साथ रणभूमि में पराजित हुआ और राम का बाण उसके हृदय को भेद गया, तब से यह दिन सदा के लिए "अच्छाई की विजय" के रूप में स्मरणीय हो गया।

इसी तरह दुर्गा सप्तशती की गाथा हमें देवी दुर्गा और महिषासुर के युद्ध की याद दिलाती है। महिषासुर केवल एक राक्षस नहीं था, बल्कि अहंकार और अत्याचार का प्रतीक था। जब देवता भी उसकी शक्ति से भयभीत होकर असहाय हो गए, तब सभी की सामूहिक शक्ति से माँ दुर्गा प्रकट हुईं। नौ दिनों तक चला वह युद्ध महिषासुर के अंत के साथ समाप्त हुआ और दसवें दिन यानी विजयादशमी को धर्म और शक्ति की विजय का संदेश मिला।

आज जब हम रावण दहन देखते हैं, तो केवल एक विशाल पुतला जलते हुए नहीं देखते, बल्कि हम यह अनुभव करते हैं कि यह हमारे भीतर छिपे रावणों का प्रतीक है। हर इंसान के भीतर क्रोध, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या, कामना और असत्य के बीज होते हैं। यह पुतला जलाने की परंपरा हमें यह याद दिलाती है कि यदि हम अपने भीतर के रावण को पराजित नहीं करेंगे तो बाहर के रावण पर विजय अधूरी रहेगी। देशभर में आज का दिन उत्सव का दिन है। कहीं मैदानों में रावण, मेघनाद और कुंभकरण के पुतले जलाए जाएंगे, तो कहीं दुर्गा प्रतिमाओं का विसर्जन होगा। बच्चों के चेहरों पर उत्साह है, महिलाएँ पूजा-अर्चना में लीन हैं, और पुरुष समाज के साथ मिलकर त्योहार का आयोजन कर रहे हैं। घर-घर में मिठाइयाँ बाँटी जा रही हैं और लोग एक-दूसरे को गले लगाकर "विजयादशमी की शुभकामनाएँ" दे रहे हैं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इस अवसर पर अपने संदेश में कहा कि विजयादशमी हमें सत्य, न्याय और सद्भाव का मार्ग दिखाती है। यह पर्व हमें प्रेरित करता है कि हम नकारात्मक प्रवृत्तियों का त्याग करें और साहस व दृढ़ संकल्प को अपनाएँ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी शुभकामनाएँ दीं और कहा कि विजयादशमी का यह पर्व शाश्वत सत्य है कि अच्छाई हमेशा बुराई पर भारी पड़ती है।

आज के युग में जब समाज में हिंसा, असमानता, भ्रष्टाचार और स्वार्थ जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, तब विजयादशमी का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। यह पर्व केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मचिंतन का अवसर है। यह हमें स्मरण कराता है कि यदि हम रावण जैसे विकारों को अपने भीतर से निकाल देंगे, तभी समाज में सच्चा रामराज्य स्थापित हो सकेगा।

रात के समय जब आग की लपटों में रावण का पुतला धधककर राख हो जाएगा, तब बच्चों की आँखों में यह स्मृति अंकित होगी कि बुराई चाहे कितनी ही प्रबल क्यों न हो, उसका अंत सुनिश्चित है। और हर बड़े-छोटे के मन में यही संकल्प जागेगा कि हम भी अपने भीतर के क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार और लोभ को जलाकर सत्य, प्रेम, करुणा और धर्म का दीप जलाएँगे। यही विजयादशमी की आत्मा है, यही उसका अनंत संदेश है—बाहरी रावण का अंत तो केवल प्रतीक है, वास्तविक विजय तब होगी जब हम अपने भीतर के रावणों पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

संपादकीय

बिश्नोई गैंग पर कार्रवाई

भारत और विदेशों में भय और असुरक्षा का माहौल बनाने वाले बिश्नोई गिरोह को कनाडा द्वारा आतंकवादी संगठन की सूची में डालने के कारण समझना कठिन नहीं है। यह कदम इस अंतर्राष्ट्रीय अपराध सिंडिकेट के बारे में भारत की चिंताओं को सही साबित करने वाला ही है। वहीं दूसरी ओर यह गैंगस्टर व आतंकवादी गठजोड़ पर कार्रवाई करने का एक स्वागत योग्य प्रयास भी है। जिसने दोनों देशों की कानून प्रवर्तन एजेंसियों को सतर्क भी किया है। दरअसल, यह गिरोह लॉरेंस बिश्नोई के नेतृत्व में भय व आतंक का पर्याय बना हुआ है। जिसने अनेक हाई-प्रोफाइल अपराधों को समय-समय पर अंजाम दिया है। यह विडंबना है और तंत्र की विफलता भी है कि गैंग का मुखिया पिछले एक दशक से अधिक समय से जेल में बंद है, इसके बावजूद गंभीर अपराधों की योजना बनाता रहा है। बिश्नोई गिरोह पर हाल के वर्षों में कई हाई-प्रोफाइल हत्याओं को अंजाम देने का आरोप है। इन हाई-प्रोफाइल हत्याओं में प्रसिद्ध पंजाबी गायक सिद्धू मूसेवाला, करणी सेना के प्रमुख सुखदेव सिंह गोगामेड़ी और महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री बाबा सिद्दिकी भी शामिल हैं। अपराधियों के गठबंधन ने बार-बार बॉलीवुड स्टार सलमान खान को हत्या की धमकी दी है। इस सिंडिकेट ने सलमान खान के मुंबई स्थित घर के बाहर भी हमले करवाए हैं। इसी तरह कनाडा में पंजाबी कलाकार ए.पी. ढिल्लों और गिप्पी ग्रेवाल के घरों के बाहर गोलाबारी में भी इस गिरोह की भूमिका बतायी गई है। दरअसल, भारत सरकार व कनाडा सरकार ने इस आपराधिक सिंडिकेट के खिलाफ कार्रवाई के लिये इसलिए भी सहयोग बढ़ाया है क्योंकि बिश्नोई गिरोह पर कनाडा में सक्रिय गैंगस्टर गोल्डी बराड़ के साथ मिलकर जबरन वसूली का कारोबार चलाने का आरोप बराबर लगता रहा है। बताया जाता है कि गैंगस्टर गोल्डी बराड़ के खालिस्तान समर्थक आतंकवादी संगठन बब्बर खालसा इंटरनेशनल से करीबी संबंध रहे हैं। जो दोनों देशों की कानून व्यवस्था के लिये एक बड़ी चुनौती बना रहा है।

हाल के दिनों में खबरें आती रही हैं कि बिश्नोई गैंग अपने भीतरी टकराव से जूझ रहा है। गिरोह में लगातार जारी आपसी झड़पों और विश्वासघात की निरंतर बढ़ती घटनाओं ने बिश्नोई गैंग को भीतर से भी कमजोर कर दिया है। इस स्थिति को भारत तथा कनाडा की सरकारों की कानूनी प्रवर्तन एजेंसियों ने इन कुख्यात अपराधियों पर चारों ओर से शिकंजा कसने के अवसर के रूप में देखा है। दरअसल, कनाडा सरकार के द्वारा बिश्नोई गैंग को आतंकवादी संगठन की सूची में शामिल करने के बाद अधिकारियों को उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने में सुविधा रहेगी। वहां के कानून के अनुसार बिश्नोई गैंग को आतंकवादी संगठन घोषित करने के बाद अब कनाडाई अधिकारियों को आतंकवादी मामलों में इन अपराधियों के खिलाफ अपराध साबित करने के लिये अतिरिक्त साधन व सुविधा मिल सकेगी। सरल शब्दों में कहें तो आतंकवादी संगठन घोषित करने के बाद कनाडाई अधिकारियों को बिश्नोई गिरोह की संपत्ति, वाहन और धन जब्त करने का अधिकार मिल जाएगा। इसमें वित्त पोषण से संबंधित मामलों में की जाने वाली कार्रवाई भी शामिल है। जिसके जरिये भारत में अपराध व हिंसा फैलाने की साजिश रची जाती रही है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सार्वजनिक सुरक्षा कनाडा सरकार की प्राथमिकता रही है। जो यह भी दर्शाता है कि कनाडा सरकार ने अपने नागरिकों के लिए कुख्यात गैंगस्टरों, आतंकवादियों और अलगाववादियों द्वारा उत्पन्न गंभीर खतरे को पहचाना है। निस्संदेह, देर-सवेर इस ज़ीरो टॉलरेंस की नीति से भारत को अपने आंतरिक सुरक्षा प्रयासों को भी मजबूती देने में मदद मिलेगी। भारत लंबे समय से कनाडा की धरती से भारत के खिलाफ अभियान चलाने वाले अलगाववादी संगठनों व व्यक्तियों के खिलाफ शिकंजा कसने की मांग करता रहा है। बिश्नोई गैंग के खिलाफ ताजा कार्रवाई से अब उम्मीद जगी है कि देर-सवेर कनाडा सरकार भारत की चिंताओं को गंभीरता से लेते हुए इन संगठनों पर कार्रवाई करेगी, जो भारत के खिलाफ लगातार विषवमन करते रहे हैं और भारत विरोधी अभियानों का वित्तीय पोषण करते रहे हैं।

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

राष्ट्र साधना के 100 वर्ष

100 वर्ष पूर्व विजयदशमी के महापर्व पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना हुई थी। ये हजारों वर्षों से चली आ रही उस परंपरा का पुनर्स्थापन था, जिसमें राष्ट्र चेतना समय-समय पर उस युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए, नए-नए अवतारों में प्रकट होती है। इस युग में संघ उसी अनादि राष्ट्र चेतना का पुण्य अवतार है। ये हमारी पीढ़ी के स्वयंसेवकों का सौभाग्य है कि हमें संघ के शताब्दी वर्ष जैसा महान अवसर देखने मिल रहा है। मैं इस अवसर पर राष्ट्रसेवा के संकल्प को समर्पित कोटि-कोटि स्वयंसेवकों को शुभकामनाएं देता हूं। मैं संघ के संस्थापक, हम सभी के आदर्शपरम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। संघ की 100 वर्षों की इस गौरवमयी यात्रा की स्मृति में भारत सरकार ने विशेष डाक टिकट और स्मृति सिक्के भी जारी किए हैं। जिस तरह विशाल नदियों के किनारे मानव सभ्यताएं पनपती हैं, उसी तरह संघ के किनारे भी सैकड़ों जीवन पुष्पित-पल्लवित हुए हैं। जैसे एक नदी जिन रास्तों से बहती हैं, उन क्षेत्रों को अपने जल से समृद्ध करती हैं, वैसे ही संघ ने इस देश के हर क्षेत्र, समाज के हर आयाम को स्पर्श किया है। जिस तरह एक नदी कई धाराओं में ख़ुद को प्रकट करती है, संघ की यात्रा भी ऐसी ही है। संघ के अलग-अलग संगठन भी जीवन के हर पक्ष से जुड़कर राष्ट्र की सेवा करते हैं। शिक्षा, कृषि, समाज कल्याण, आदिवासी कल्याण, महिला सशक्तिकरण, समाज जीवन के ऐसे कई क्षेत्रों में संघ निरंतर कार्य करता रहा है। विविध क्षेत्र में काम करने वाले हर संगठन का उद्देश्य एक ही है, भाव एक ही है....राष्ट्र प्रथम

अपने गठन के बाद से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र निर्माण का विराट उद्देश्य लेकर चला। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ ने व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण रास्ता चुना और इस चलने के लिए जो कार्यपद्धति चुनी वो थी नित्य-नियमित चलने वाली शाखाएं। संघ शाखा का मैदान, एक ऐसी प्रेरणा भूमि है, जहां से स्वयंसेवक की अहम् से वयं की यात्रा शुरू होती है। संघ की शाखाएंव्यक्ति निर्माण की यज्ञवेदी हैं। राष्ट्र निर्माण का महान उद्देश्य, व्यक्ति निर्माण का स्पष्ट पथ और शाखा जैसी सरल, जीवंत कार्यपद्धति यही संघ की सौ वर्षों की यात्रा का आधार बने। इन्हीं स्तंभों पर खड़े होकर संघ ने लाखों स्वयंसेवकों को गढ़ा, जो विभिन्न क्षेत्रों में देश को आगे बढ़ा रहे हैं। संघ जब से अस्तित्व में आयासंघ के लिए देश की प्राथमिकता ही उसकी अपनी प्राथमिकता रही। आज़ादी की लड़ाई के समय परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी समेत अनेक कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया, डॉक्टर साहब कई बार जेल तक गए। आजादी की लड़ाई में कितने ही स्वतन्त्रता सेनानियों को संघ संरक्षण देता रहाउनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करता रहा। आजादी के बाद भी संघ निरंतर राष्ट्र साधना में लगा रहा। इस यात्रा में संघ के खिलाफ साजिशें भी हुईं, संघ को कुचलने का प्रयास भी हुआ। ऋषितुल्य परम पूज्य गुरु जी को झूठे केस में फंसाया गया। लेकिन संघ के स्वयंसेवकों ने कभी कटुता को स्थान नहीं दिया। क्योंकि वो जानते है, हम समाज से अलग नहीं हैं, समाज हमसे ही तो बना है। समाज के साथ एकात्मता और संवैधानिक संस्थाओं के प्रति आस्था ने संघ के स्वयंसेवकों को हर संकट में स्थित प्रज्ञ रखा हैसमाज के प्रति संवेदनशील बनाए रखा है। प्रारंभ से संघ राष्ट्रभक्ति और सेवा का पर्याय रहा है। जब विभाजन की पीड़ा ने लाखों परिवारों को बेघर कर दिया, तब स्वयंसेवकों ने शरणार्थियों की सेवा की। हर आपदा में संघ के स्वयंसेवक अपने सीमित संसाधनों के साथ सबसे आगे खड़े रहते रहे। यह केवल राहत नहीं थी, यह राष्ट्र की आत्मा को संबल देने का कार्य था। खुद कष्ट उठाकर दूसरों के दुख हरना...ये हर स्वयंसेवक की पहचान है। आज भी प्राकृतिक आपदा में हर जगह स्वयंसेवक सबसे पहले पहुंचने वालों में से एक रहते हैं। अपनी 100 वर्षों की इस यात्रा में, संघ ने समाज के अलग-अलग वर्गों में आत्मबोध जगायास्वाभिमान जगाया। संघ देश के उन क्षेत्रों में भी कार्य करता रहा है..जो दुर्गम हैंजहाँ पहुँचना सबसे कठिन है। संघ...दशकों से आदिवासी परंपराओं, आदिवासी रीति-रिवाज, आदिवासी मूल्यों को सहेजने-संवारने में अपना सहयोग देता रहा है...अपना कर्तव्य निभा रहा है। आज सेवा भारती...विद्या भारती, एकल विद्यालय...वनवासी कल्याण आश्रम...आदिवासी समाज के सशक्तिकरण का स्तंभ बनकर उभरे हैं। समाज में सदियों से घर कर चुकी जो बीमारियाँ हैं, जो ऊंच-नीच की भावना है, जो कुप्रथाएं हैं, ये हिन्दू समाज की बहुत बड़ी चुनौती रही हैं। ये एक ऐसी गंभीर चिंता है, जिस पर संघ लगातार काम करता रहा है। डॉक्टर साहब से लेकर आज तक, संघ की हर महान विभूति ने, हर सर-संघचालक ने भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। परम पूज्य गुरु जी ने निरंतर "न हिन्दू पतितो भवेत्' की भावना को आगे बढ़ाया। पूज्य बाला साहब देवरस जी कहते थे- छुआछूत अगर पाप नहीं, तो दुनिया में कोई पाप नहीं! सरसंघचालक रहते हुए पूज्य रज्जू भैया जी और पूज्य सुदर्शन जी ने भी इसी भावना को आगे बढ़ाया। वर्तमान सरसंघचालक आदरणीय मोहन भागवत जी ने भी समरसता के लिए समाज के सामने एक कुआं, एक मंदिर और एक श्मशान का स्पष्ट लक्ष्य रखा है। जब 100 साल पहले संघ अस्तित्व में आया था तो उस समय की आवश्यकताएं, उस समय के संघर्ष कुछ और थे। लेकिन आज 100 वर्षों बाद जब भारत विकसित होने की तरफ बढ़ रहा है तब आज के समय की चुनौतियां अलग हैं, संघर्ष अलग हैं। दूसरे देशों पर आर्थिक निर्भरता, हमारी एकता को तोड़ने की साजिशें, डेमोग्राफी में बदलाव के षड़यंत्र, हमारी सरकार इन चुनौतियों से तेजी से निपट रही है। मुझे ये खुशी है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी इन चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस रोडमैप भी बनाया है। संघ के पंच परिवर्तन, स्व बोध, सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, नागरिक शिष्टाचार और पर्यावरण ये संकल्प हर स्वयंसेवक के लिए देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों को परास्त करने की बहुत बड़ी प्रेरणा हैं। स्व बोध की भावना का उद्देश्य गुलामी की मानसिकता से मुक्त होकर अपनी विरासत पर गर्व और स्वदेशी के मूल संकल्प को आगे बढ़ाना है। सामाजिक समरसता के जरिए वंचित को वरीयता देकर सामाजिक न्याय की स्थापना का प्रण है। आज हमारी सामाजिक समरसता को घुसपैठियों के कारण डेमोग्राफी में आ रहे बदलाव से भी बड़ी चुनौती मिल रही है। देश ने भी इससे निपटने के लिए डेमोग्राफी मिशन की घोषणा की है। हमें कुटुम्ब प्रबोधन यानी परिवार संस्कृति और मूल्यों को भी मजबूत बनाना है। नागरिक शिष्टाचार के जरिए नागरिक कर्तव्य का बोध हर देशवासी में भरना है। इन सबके साथ अपने पर्यावरण की रक्षा करते हुये आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करना है। अपने इन संकल्पों को लेकर संघ अब अगली शताब्दी की यात्रा शुरू कर रहा है। 2047 के विकसित भारत में संघ का हर योगदान, देश की ऊर्जा बढ़ाएगा, देश को प्रेरित करेगा। पुनः प्रत्येक स्वयंसेवक को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

प्रेरणा

दशहरा: अधर्म पर धर्म की विजय और आत्मशुद्धि का संकल्प

विजयादशमी अर्थात् दशहरा भारतीय संस्कृति का वह पावन पर्व है जो हर वर्ष हमें यह स्मरण कराता है कि असत्य और अधर्म चाहे कितने ही बलशाली क्यों न प्रतीत हों, उनकी विजय कभी स्थायी नहीं हो सकती। सत्य, धर्म और न्याय की ही अंततः विजय होती है। यह पर्व केवल एक ऐतिहासिक घटना का स्मरण नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का दर्पण और भविष्य का मार्गदर्शन भी है।

दशहरे से जुड़े दो महान प्रसंग हमें धर्म की महत्ता और शक्ति का बोध कराते हैं। पहला प्रसंग है भगवान श्रीराम का लंका विजय और रावण वध। रावण अत्यंत विद्वान, पराक्रमी और शक्तिशाली था, किंतु उसका अहंकार और अन्याय उसे विनाश की ओर ले गया। जब उसने माता सीता का हरण किया और धर्म के मार्ग से भटका, तब श्रीराम ने धर्म की रक्षा के लिए उसका संहार किया। दूसरा प्रसंग है मां दुर्गा का महिषासुर पर विजय पाना। महिषासुर अपनी शक्ति और सामर्थ्य के बल पर संसार में आतंक फैला रहा था, किंतु अंततः वह भी देवी दुर्गा की दिव्य शक्ति के आगे पराजित हुआ। इन दोनों घटनाओं का संदेश यही है कि अधर्म और अन्याय कितने भी प्रबल क्यों न हों, धर्म और सत्य के सामने उनका अंत निश्चित है।

दशहरा केवल पुरानी घटनाओं का उत्सव नहीं है, बल्कि यह हमें आत्मचिंतन का अवसर देता है। हमारे भीतर भी एक रावण छिपा हुआ है—अहंकार, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, मोह और अनैतिक इच्छाओं के रूप में। जब तक हम अपने अंदर छिपे इन दोषों का दहन नहीं करेंगे, तब तक सच्ची विजय संभव नहीं है। रावण के दस सिर हमारे दस दोषों का प्रतीक हैं, जिन्हें हमें हर दशहरे पर जलाना चाहिए। यही आत्मशुद्धि का संकल्प है। यह पर्व केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी महान है। उत्तर भारत में रावण दहन की परंपरा हमें यह स्मरण कराती है कि अधर्म अंततः नष्ट होता है। पश्चिम बंगाल और पूर्वी भारत में दुर्गा प्रतिमाओं का विसर्जन शक्ति के सम्मान और जीवन में पवित्रता का प्रतीक है। दक्षिण भारत में इस दिन विद्या और कला की पूजा होती है, जो यह सिखाती है कि ज्ञान और संस्कृति ही जीवन को समृद्ध बनाते हैं। इस प्रकार दशहरा सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधता है और धर्म, सत्य तथा शक्ति का अद्वितीय संदेश देता है। आज जब समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा, अन्याय और असत्य की शक्तियाँ सक्रिय हैं, तब दशहरे का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हम न केवल बाहरी बुराई का विरोध करें, बल्कि अपने भीतर की कमजोरियों को भी परास्त करें। श्रीराम की तरह मर्यादा और धर्म का पालन करें, और मां दुर्गा की तरह साहस और शक्ति के साथ अन्याय का नाश करें। दशहरे का वास्तविक संदेश यही है कि हम जीवन में धर्म और सत्य के मार्ग पर चलें। अपनी शक्ति और ज्ञान का उपयोग लोककल्याण में करें, न कि स्वार्थ और अहंकार में। जब हम अपने भीतर के दोषों का दहन करेंगे और प्रेम, करुणा व सद्भावना का संचार करेंगे, तभी यह पर्व हमारे जीवन में सार्थक होगा।

आज जब हम रावण के पुतले जलाएँगे, तो यह केवल परंपरा न रह जाए, बल्कि आत्मशुद्धि का एक संकल्प बने। हम प्रण लें कि हम सत्य का साथ देंगे, धर्म का पालन करेंगे और अन्याय का विरोध करेंगे। यही दशहरे की आत्मा है और यही इस महापर्व का वास्तविक उद्देश्य है।

जातिवाद, वैचारिक विरोधी और संघ

यह संयोग ही है कि ठीक सौ साल पहले 'राष्ट्र प्रथम' की भावना के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई, ठीक उसके कुछ ही महीने बाद छब्बीस दिसंबर 1925 को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। सौ साल की यात्रा को जब पीछे मुड़कर देखते हैं तो पता चलता है कि जोर-शोर से शुरू हुआ भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन भारत भूमि पर दम तोड़ता नजर आ रहा है, जबकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा लगातार आगे बढ़ रही है। सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक मोर्चे पर संघ की वैचारिकी की प्रगति यात्रा जारी है।

एक ही वक्त पर शुरू दोनों वैचारिकी में एक विशेष अंतर रहा। वाम आंदोलन के निशाने पर सदा संघ की विचारधारा और संगठन रहा। संघ के खिलाफ कभी सत्ता के सहयोग से तो कभी किसी और तरीके दुष्प्रचार खूब फैलाया गया। उसी में एक विचार ऐसा है कि संघ मुसलमानों के खिलाफ है। वैचारिक और सामाजिक मोर्चे पर यह भी स्थापित करने की कोशिश की गई कि संघ भारतभूमि से मुस्लिम धर्म का समूल खात्मा चाहता है। लेकिन हकीकत कुछ और है। संघ की प्रतिनिधि सभा के सदस्य और वरिष्ठ कार्यकर्ता इंद्रेश कुमार जी के संयोजन में साल 2002 से 'राष्ट्रीय मुस्लिम मंच' नाम का संगठन काम कर रहा है। इसका प्रमुख उद्देश्य इस्लाम मानने वाले भारतीय लोगों के बीच 'राष्ट्र प्रथम' की भावना के संदर्भ में भारतीय राष्ट्रीयता के विचार को बढ़ावा देना है। संघ का कोई घोषित या अघोषित उद्देश्य नहीं है कि भारत भूमि मुस्लिम लोगों से मुक्त हो। संघ का प्रयास है कि भारत के मुसलमानों को लेकर स्थापित छवि बदले और राष्ट्र निर्माण में भी उनकी भूमिका हो। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दूसरे सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर 'गुरू' जी रचित किताब 'ब्रंच ऑफ थॉट' का हवाला देकर अक्सर संघ को मुस्लिम विरोधी और सांप्रदायिक होने का प्रयास किया जाता है। वामपंथी विचारधारा के बुद्धिजीवियों को जब भी संघ पर हमला करना होता है, 1966 में प्रकाशित इसी किताब का वे हवाला देते हैं। संघ के मौजूदा सरसंघचालक मोहन राव भागवत जी इस बारे में अपनी राय खुलकर जाहिर कर चुके हैं। सात साल पहले सितंबर 2018 में दिल्ली के विज्ञान भवन में हुई तीन दिनों की विशेष व्याख्यान माला के आखिरी दिन 20 सितंबर को संघ प्रमुख ने श्रोताओं से आमंत्रित प्रश्नों का जवाब दिया था। उसमें 'ब्रंच ऑफ थॉट' को लेकर भी एक प्रश्न पूछा गया था। उस प्रश्न के जवाब में मोहन राव भागवत ने कहा था, 'रही बात, 'बंच ऑफ थॉट्स' की, तो बातें जो बोली जाती हैं वे परिस्थिति विशेष, प्रसंग विशेष के संदर्भ में बोली जाती हैं। वे शाश्वत नहीं रहतीं।' इसी सवाल के जवाब में भागवत जी ने आगे कहा था, आरएसएस कोई संकीर्ण संगठन नहीं है. समय के साथ हमारे विचार और इनका प्रकटीकरण भी बदलता है।

संघ प्रमुख मुसलमान समुदाय को लोगों को भी अपना ही मानते हैं। इसी व्याख्यान माला में उन्होंने कहा था कि, 'हम एक देश की संतान हैं, भाई-भाई जैसे रहें। इसलिए संघ का अल्पसंख्यक शब्द को लेकर रिज़र्वेशन है। संघ इसको नहीं मानता. सब अपने हैं, दूर गए तो जोड़ना है।' संघ को लेकर एक आरोप लगता है कि वह जातिवादी है। विशेषकर संघ विरोधी बुद्धिजीवी कहने से नहीं हिचकते कि संघ में उच्च जातियों का वर्चस्व है। के एस भारती द्वारा संपादित और 1988 में प्रकाशित 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एमिनेंट थिंकर के सातवें खंड में दिए विवरण के अनुसार महात्मा गांधी 1934 में वर्धा में आयोजित संघ के एक शिविर का दौरा किया था। तब वे बगल में ही सेवाग्राम आश्रम में ठहरे हुए थे। संघ के शिविर का जिज्ञासावश दौरा करने पहुंचे गांधी जी को यह देखकर आश्चर्य हुआ था कि गांधीजी को इस बात से और भी आश्चर्य हुआ कि वर्धा शिविर में अस्पृश्यता, जातिगत उपेक्षा या अन्य भेदभावपूर्ण तौर-तरीके बिलकुल नहीं थे। गांधी जी के दौरे वक्त संघ के शिविर में अप्पाजी जोशी थे। इससे गांधी जी बहुत प्रभावित हुए थे। संघ और गांधी के संबंधों को लेकर भी बहुत कुछ लिखा जा चुका है। लेकिन गांधी वांग्मय में संग्रहीत तथ्यों से इससे जुड़े वैचारिक कुहासे से भी भी पर्दा उठता है। गांधी वांग्मय के 87वें खंड में मिलता है। इसके अनुसार अप्रैल 1947 में दिल्ली में हिंदू-मुस्लिम एकता के संदर्भ में हुई एक प्रार्थना सभा में, गांधीजी ने बताया था कि उन्हें संघ से एक पत्र मिला है, जिसमें इस बात से इनकार किया गया है कि हाल ही में गांधीजी द्वारा अपनी सभाओं में कुरान की आयतों को गीता की आयतों के साथ रखने के विरोध में संघ का कोई हाथ था। गांधीजी ने कहा कि उन्हें इस खंडन के बारे में सुनकर खुशी हुई, और आगे कहाः कोई भी संगठन जीवन या धर्म की रक्षा नहीं कर सकता जब तक कि वह पूरी तरह से खुले तौर पर काम न करे। सितंबर 1947 में गांधीजी नई दिल्ली में संघ कार्यकर्ताओं से मिले थे। तब गांधी जी उनसे कहा था कि 'वास्तव में उपयोगी होने के लिए, आत्म-बलिदान के साथ-साथ पवित्र उद्देश्य और सच्चे ज्ञान का भी समावेश होना आवश्यक है। संघ के जातिवादी होने के सवाल पर विज्ञान भवन के कार्यक्रम में भागवत जी ने कहा था कि अगर भारत में अंतररजातीय विवाहों की गणना किया जाए तो अंतरजातीय विवाह करने वालों में सबसे ज्यादा संख्या संघ के स्वयंसेवकों की होगी। संघ पर वामपंथी लोगों का विरोधी होने का भी आरोप लगता है। लेकिन संघ प्रमुख इसे भी साफ कर चुके हैं।

राष्ट्र हित के संदर्भ में वाम विचारधारा पर सवाल उठने जायज हैं। वाम विचारधारा भारतीयता की धारणा को तार-तार करती है। लेकिन उसे मानने वाले लोगों से संघ कभी घृणा नहीं करता, नहीं विद्वेषभाव रखता है। संघ प्रमुख तो अब बार-बार कहते हैं कि भारत में जो भी हैं, सब अपने हैं। उन्हें अपने साथ जोड़ना है।

संघ ने शताब्दी वर्ष में जो पंच प्रतिष्ठा निर्धारित की है, उसमें तीसरा 'सामाजिक समरसता' है। सामाजिक समरसता के संदर्भ में संघ का मानना है कि भारत भूमि में रहने वाले सभी लोग अपने हैं। कुछ भटके हुए हैं, उन्हें अपने साथ जोड़ना है और भारत राष्ट्र को स्वावलंबी और मजबूत बनाना है। यह तभी संभव होगा, जब समूचे भारत का समाज एक होगा।

अभियान

गांधी और गांधी विचार को कुचलने की कुचेष्टाएं कब तक?

लंदन के प्रसिद्ध टैविस्टॉक स्क्वायर में महात्मा गांधी की 57 साल पुरानी कांस्य की प्रतिमा पर हुआ हमला केवल एक मूर्ति को क्षतिग्रस्त करने की घटना भर नहीं है, बल्कि यह गांधी के अस्तित्व, उनके विचार और भारत की आत्मा पर आघात है। गांधी प्रतिमा के साथ छेड़छाड़ करते हुए काले रंग से लिखा है, 'गांधी-मोदी, हिंदुस्तानी टेररिस्ट...।' वहां एक तिरंगे का भी अपमान किया गया है और उसपर भी 'टेररिस्ट' लिखा हुआ है। जिस समय यह हमला हुआ, वह भी बेहद प्रतीकात्मक है, अंतरराष्ट्रीय गांधी जयंती यानी अहिंसा दिवस से महज तीन दिन पहले। यह समय का ऐसा चयन है जो यह दर्शाता है कि अहिंसा के विचार और गांधी के व्यक्तित्व को मिटाने की एक सुनियोजित विकृत मानसिकता एवं साजिश है। गांधी की प्रतिमा महज धातु का ढांचा नहीं, बल्कि उन मूल्यों का जीवंत प्रतीक है जिन्होंने न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया को नई दृष्टि दी, नई दिशा दी एवं शांतिपूर्ण अहिंसक जीवनशैली दी है। इस पर आघात करना इस बात का प्रमाण है कि हिंसा की प्रवृत्तियां, आतंक की मानसिकता एवं नफरत-द्वेष की विध्वंक शक्तियां अब भी गांधी के विचारों से डरती हैं और उसे क्षत-विक्षत एवं ध्वस्त करने के षडयंत्र रचती रहती है, पर महात्मा गांधी भारत के अकेले ऐसे महापुरुष हैं जिन्हें कोई गोली या गाली नहीं मार सकती। गांधी की राजनीति व धर्म का आधार सत्ता नहीं, सेवा था, वसुधैव कुटुम्बकम् था। जनता को भयमुक्त व वास्तविक आजादी दिलाना उनका लक्ष्य था। वे सम्पूर्ण मानवता की अमर धरोहर हैं। उन्होंने दुनिया को अहिंसा का सूत्र देकर शांतिपूर्ण विश्व-संरचना की। दलितों के उद्धार और उनकी प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन लगा दिया था। उनके जीवन की विशेषता कथनी और करनी में अंतर नहीं होना था।

महात्मा गांधी की प्रतिमा पर अज्ञात लोगों ने जो हमला किया और आपत्तिजनक नारे लिखे। भारतीय उच्चायोग ने इसे अहिंसा की विरासत पर हमला बताया। मेट्रोपॉलिटन पुलिस जांच में जुटी है। ब्रिटेन की उच्चायुक्त लिंडी कैमरन ने घटना को दुखद बताते हुए कहा कि गांधी की शिक्षाएं हमें सदा एकजुट करती रहेंगी। गांधी के व्यक्तित्व एवं विचारों को आहत करने की यह घटना केवल ब्रिटेन के अस्तित्व एवं अस्मिता तक सीमित नहीं रहती, बल्कि भारत की गरिमा और उसकी सांस्कृतिक उपस्थिति को भी चुनौती देती है। जब किसी राष्ट्र के सार्वभौमिक प्रतीक पर हमला होता है, तो वह उस राष्ट्र के स्वाभिमान और उसके विचारों पर हमला माना जाता है। गांधी केवल भारत के नायक नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के नैतिक मार्गदर्शक हैं। उनका स्मारक क्षतिग्रस्त करना मानवता की उस चेतना को धूमिल करने का प्रयास है जो संवाद, सहिष्णुता, अहिंसा और शांति पर आधारित है। ऐसे समय में जब दुनिया युद्ध, आतंक और कट्टरता से त्रस्त है, गांधी का विचार और भी प्रासंगिक हो जाता है। ऐसे विचार को कुचलने की चेष्टा न केवल भारत के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर चुनौती है। समीक्षात्मक दृष्टि से देखा जाए तो यह घटना हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि आखिर क्यों अहिंसा जैसे सार्वभौमिक मूल्य आज के दौर में असहनीय प्रतीत होते हैं? क्यों कुछ समूह इतिहास को मिटाने और संवाद की जगह हिंसा को स्थापित करने पर आमादा हैं? यह केवल अतीत की स्मृति पर हमला नहीं है, बल्कि भविष्य की दिशा पर भी सवाल खड़ा करता है। मूर्तियां टूटीं तो उन्हें ठीक किया जा सकता है, लेकिन यदि विचारों को खंडित करने का यह सिलसिला जारी रहा तो यह मानवता की आत्मा के लिए घातक सिद्ध होगा। समय-समय पर शरारती एवं असामाजिक तत्व देश एवं दुनिया में भारत की महान् विभूतियों- गांधी-मोदी के दर्शन व उनकी कार्य-पद्धतियों पर कीचड़ उछालते रहे हैं और उन्हें गालियां देकर गौरवान्वित होते रहे हैं। ताजा गांधी प्रतिमा को तोड़ने की घटना किसी साधारण शरारत या स्थानीय असंतोष का परिणाम नहीं है, बल्कि यह उस गहरी हिंसक, आतंकी और विकृत मानसिकता का प्रतीक है, जो दुनिया में अहिंसा की आवाज़ को दबाना चाहती है। यह घटना केवल एक प्रतिमा को खंडित करने की नहीं, बल्कि महात्मा गांधी के विचारों पर आहत करने की साजिश है। गांधी महज एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक दर्शन हैं। उनके सत्य और अहिंसा के सिद्धांत विश्व राजनीति, समाज और मानवता के लिए अब भी सबसे बड़ी प्रेरणा बने हुए हैं। इसीलिए हिंसक मानसिकताएं बार-बार इन मूल्यों को मूक बनाने या कुचलने का प्रयास करती हैं। गांधी प्रतिमा पर हमला वस्तुतः उसी मानसिकता की पुनरावृत्ति है, जिसने उनकी हत्या की थी। आज यह मानसिकता कभी धार्मिक उग्रवाद, कभी नस्लीय भेदभाव, कभी आतंकवाद और कभी आर्थिक साम्राज्यवाद का रूप धारण करके सामने आती है। यह घटना भारत ही नहीं, पूरी दुनिया के लिए गंभीर चेतावनी है कि यदि अहिंसा और सहअस्तित्व की आवाज़ को चुप करा दिया गया, तो मानव सभ्यता हिंसा, आतंक और विनाश के अंधकार में जा सकती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीते वर्षों में जिस तरह शांति, वैश्विक सहयोग और अहिंसक संवाद की परंपरा को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है, वह गांधी दर्शन की ही आधुनिक अभिव्यक्ति है। अंतरराष्ट्रीय संघर्षों, जलवायु संकटों, आतंकवादी क्रुरताओं और युद्ध की विभीषिकाओं से जूझती दुनिया में भारत की यह भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। ऐसे में गांधी प्रतिमा पर हमला, दरअसल इस शांति अभियान को ठेस पहुँचाने का संगठित प्रयास है। यह केवल भारत को नहीं, बल्कि उन सभी देशों और समुदायों को चुनौती है, जो अहिंसा को सभ्यता का मूल मंत्र मानते हैं। आज यह जरूरी है कि हम इस हिंसक और आतंकवादी मानसिकता को करारा जवाब दें। यह जवाब केवल प्रतिवाद या आक्रोश से नहीं, बल्कि गांधी के विचारों को और अधिक दृढ़ता से जीकर और फैलाकर देना होगा। जब-जब गांधी प्रतिमा पर चोट की गई है, तब-तब गांधी और बड़े होकर खड़े हुए हैं। कभी-कभी प्रशंसा नहीं ऐसी गालियां गांधी को ज्यादा पूजनीय बनाती रही हैं। जिस प्रकार गांधी ने कहा था- "आप मुझे मार सकते हैं, मेरे शरीर को नष्ट कर सकते हैं, पर मेरे विचारों को समाप्त नहीं कर सकते"-यह सत्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है। दरअसल, अहिंसा को कुचलने की हर कोशिश अहिंसा को और अधिक शक्तिशाली बना देती है। यह हमला गांधी की अमरता का प्रमाण है। हमें इस अवसर को केवल निंदा तक सीमित न रखकर, गांधी के सत्य, प्रेम और सहिष्णुता के संदेश को और व्यापक स्तर पर प्रसारित करना चाहिए। तभी आतंकवादी मानसिकता को वास्तविक और स्थायी जवाब मिलेगा।

गांधी को कितने सालों से कटघरे में खड़ा किया जाता रहा है। जीते जी और मरने के बाद गांधी ने कम गालियां नहीं खाईं। गोडसे ने गोली से उनके शरीर को मारा पर आज तो उनके विचारों को बार-बार मारा जा रहा है। महात्मा के शिष्यों ने, बापू के बेटों ने, संत के अनुयायियों ने और गांधी की पार्टी वालों ने उनको बार-बार बेचा है, उनसे कमाया है, उनके नाम से वोट मांगे हैं, सत्ता प्राप्त की है, सुबह-शाम धोखा दिया है और उनकी चादर से अपने दाग छिपाये हैं। लेकिन बहुत हो गया, अब यह आवश्यक है कि इस घटना का विरोध केवल भावनात्मक या औपचारिक स्तर पर न होकर ठोस, नैतिक और प्रभावी स्वरूप में हो। आज गांधी को खोजने की जरूरत मूर्तियों में नहीं, बल्कि अपने जीवन और आचरण में है। यही इस घटना से निकला सबसे बड़ा संदेश है कि अहिंसा की रक्षा केवल स्मारकों से नहीं बल्कि व्यवहार से होगी। गांधी की प्रतिमा का क्षरण क्षणिक है, किंतु उनके विचारों की हत्या यदि हम होने देंगे तो यह सम्पूर्ण मानवता की हार होगी। लंदन में गांधीजी की इस प्रतिमा का अनावरण 1968 में इंडिया लीग के सहयोग से हुआ था। यूके में गांधी जयंती के मौके पर यह जगह लंबे समय से मुख्य आकर्षण का केंद्र रहा है। हर साल 2 अक्टूबर को यहां फूलों से श्रद्धांजलि दी जाती है और गांधीजी के प्रिय भजन बजते हैं। इस दिन को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है, जिसे संयुक्त राष्ट्र ने मान्यता दे रखी है। इसके चबूतरे पर लिखा है- 'महात्मा गांधी, 1869-1948'। उनका लंदन से ऐतिहासिक संबंध रहा है, जहां उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में कानून की पढ़ाई की थी।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

करुर हादसे के बाद विजय रथ रुका, टीवीके ने रैलियों को दो हफ्तों के लिए स्थगित किया

(जीएनएस)।
करुर। तमिल अभिनेता और तमिलगा वेत्री कझगम (टीवीके) पार्टी प्रमुख विजय की करुर रैली में हुई भगदड़ की त्रासदी का असर अब उनकी सभी आगामी गतिविधियों पर दिखाई दे रहा है। 27 सितंबर को हुई इस जनसभा में 41 लोग मारे गए और 60 से अधिक लोग घायल हो गए थे। भीड़ को नियंत्रित करने में बड़ी चूक सामने आई और बड़ी संख्या में लोग दबकर अपनी जान गंवा बैठे।

इस हादसे के बाद पार्टी ने अगले दो हफ्तों के लिए विजय की सभी रैलियों को अस्थायी रूप से स्थगित करने का निर्णय लिया है। टीवीके के मुख्यालय ने सोशल मीडिया पर बयान जारी करते हुए कहा कि करुर की यह त्रासदी सबको हिला देने वाली थी और ऐसे माहौल में कार्यक्रम जारी रखना उचित नहीं होगा। पार्टी ने स्पष्ट किया कि विजय की "जनता से मिलो" पहल के तहत हर शनिवार आयोजित होने वाली रैलियां आगामी दो हफ्तों तक नहीं होंगी। विजय अब तक तिरुचिरापल्ली, नमक्कल और करुर का दौरा कर चुके हैं। रैलियों की नई तारीखों की घोषणा केवल विजय की मंजूरी के बाद ही की जाएगी।

टीवीके की सोशल मीडिया पोस्ट में कहा गया कि पार्टी अपने 41 साथियों की मृत्यु पर गहरे दुख और व्यथित है। इस मुश्किल समय में पार्टी पीड़ित परिवारों के साथ खड़ी है। विजय ने भी घायलों के इलाज और पीड़ित परिवारों की मदद के लिए कदम उठाने की घोषणा की है।

राजनीतिक पर्यवेक्षकों ने इस निर्णय को "संवेदनशील और जिम्मेदार" कदम बताया है। करुर की त्रासदी न केवल टीवीके पार्टी पर बल्कि तमिलनाडु की राजनीति पर भी गहरा असर डाल चुकी है। अगली रैलियों की सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत किए जाने के बाद ही सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

अहमदाबाद मंडल पर "स्वच्छता पखवाड़ा – 2025" का शुभारंभ

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल में 01 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2025 तक "स्वच्छता पखवाड़ा – 2025" का आयोजन किया जा रहा है। इस पखवाड़े का उद्देश्य स्वच्छता को केवल प्रशासनिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक जन-आंदोलन का रूप देना है, जिससे रेलवे परिसरों, प्लेटफॉर्म, टिकट काउंटर, वेटिंग हॉल और अन्य यात्री सुविधाओं में सफाई और अधिक प्रभावी और सतत बनी रहे।

दिनांक 01.10.2025 को "स्वच्छता पखवाड़े का शुभारंभ मंडल कार्यालय में आयोजित शपथ ग्रहण कार्यक्रम और प्रभात फेरियों के साथ किया गया। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्रीमती मंजू मीणा ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता रखने की शपथ दिलाई और पखवाड़े के सफल आयोजन तथा यात्रियों को बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध कराने हेतु सभी कर्मचारियों को प्रेरित किया। मंडल के अहमदाबाद, साबरमती, पालनपुर, गांधीधाम, महेसाणा सहित विभिन्न स्टेशनों पर भी शपथग्रहण कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें 2000 से अधिक रेल कर्मचारियों ने भाग लिया और स्वच्छता बनाए रखने की शपथ ली।

इसके अतिरिक्त रेलवे परिसरों और प्लेटफॉर्म पर सफाई के महत्व के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। इस दौरान मण्डल के विभिन्न स्थानों पर 500 से अधिक कर्मचारियों ने श्रमदान कर रेल परिसरों को स्वच्छ किया और यात्रियों के लिए स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित किया।

"स्वच्छता पखवाड़ा–2025" के अंतर्गत अहमदाबाद मंडल आगामी दिनों में विशेष स्वच्छता अभियान, जन-जागरूकता कार्यक्रम, निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिताएँ, तथा यात्रियों को स्वच्छता का संदेश देने हेतु विविध प्रचार-प्रसार गतिविधियाँ आयोजित करेगा।

अहमदाबाद मंडल का मानना है कि स्वच्छता केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी है। इस पखवाड़े के माध्यम से रेलवे न केवल अपने परिसरों को साफ-सुथरा बनाएगा बल्कि यात्रियों और आम जनता में स्वच्छता के महत्व को भी जागरूक करेगा।

रेलवे उपकरणों का बड़ा निर्यातक बन रहा है भारत

(जीएनएस)। भारतीय रेलवे मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड विजन के तहत बोगियों, कोचों, लोकोमोटिव और प्रणोदन प्रणालियों सहित महत्वपूर्ण रेलवे उपकरणों के वैश्विक निर्यातक के रूप में तेज़ी से उभर रहा है। यह बढ़ता निर्यात क्षेत्र भारत की डिज़ाइन, विकास और मेक इन इंडिया-मेक फॉर द वर्ल्ड को दर्शाता है। भारत के रेलवे उत्पाद तेजी से अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच रहे हैं। मेट्रो कोच ऑस्ट्रेलिया और कनाडा को निर्यात किए गए हैं, बोगियां ब्रिटेन, सऊदी अरब, फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया को, प्रणोदन प्रणालियां फ्रांस, मैक्सिको, रोमानिया, स्पेन, जर्मनी और इटली को, यात्री कोच मोजाम्बिक, बांग्लादेश और श्रीलंका को, तथा लोकोमोटिव मोजाम्बिक, सेनेगल, श्रीलंका, म्यांमार, बांग्लादेश और गिनी गणराज्य को निर्यात किए गए हैं।जून 2025 में, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बिहार के मढ़ौरा लोकोमोटिव निर्माण संयंत्र से गिनी गणराज्य के लिए निर्यात हेतु पहले इंजनों को हरी झंडी दिखाई। अब तक, मढ़ौरा में निर्मित 6 इंजनों का सफलतापूर्वक निर्यात किया जा चुका है। हाल ही में, ये इंजन गिनी गणराज्य पहुंच गए हैं। मढ़ौरा प्लांट ने इवोल्यूशन सीरीज़ के इंजनों के निर्यात के लिए दूसरा रणनीतिक ऑर्डर हासिल कर लिया है, जिससे अफ्रीका के लिए कुल निर्यात लगभग 150 इकाइयों का हो गया है। 4,500 एचपी इवोल्यूशन सीरीज़ इंजन से युक्त ये लोकोमोटिव, अपनी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ ईंधन दक्षता और उच्च तापमान वाले वातावरण में भी सिद्ध प्रदर्शन प्रदान करते हैं। ये लोकोमोटिव भारत की इंजीनियरिंग क्षमता और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों की मांगों को पूरा करने की क्षमता को दर्शाते हैं। बिहार में मढ़ौरा संयंत्र की सफलता रणनीतिक सार्वजनिक-निजी भागीदारी का प्रमाण है, जो नवाचार, कौशल विकास और वैश्विक रेलवे आपूर्ति श्रृंखला में प्रभावी योगदान देने की भारत की क्षमता को प्रदर्शित करती है।

अहमदाबाद मंडल में रेलवन ऐप का सफल संचालन – यात्रियों को मिल रही रेलवन ऐप से सुविधाजनक डिजिटल सेवाएँ

भारतीय रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए विकसित की गई आधुनिक तकनीक आधारित रेलवन ऐप (Railone App) अहमदाबाद मंडल में सफलतापूर्वक संचालित हो रही है। यह ऐप यात्रियों को पूरे वर्ष सुविधाजनक सेवाएँ प्रदान करता है और विशेष रूप से दुर्गापूजा, दशहरा, दीपावली, और छठपूजा जैसे त्योहारी मौसम में भारी भीड़ के बीच सुगम यात्रा सुनिश्चित कर रहा है।

रेलवन ऐप — एक ही प्लेटफॉर्म पर सभी प्रमुख सेवाएँ

भारतीय रेल का नवीनतम रेलवन ऐप पुराने रेलकनेक्ट एवं यूटीएस ऐप को एकीकृत करता है और एंड्रॉयड व आईओएस दोनों प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध है। यह यात्रियों को एक ही मंच पर सभी प्रमुख डिजिटल सुविधाएँ प्रदान करता है, जिससे यात्रा का अनुभव और भी सहज बनता है।

रेलवन ऐप की प्रमुख विशेषताएँ :

- आरक्षित, अनारक्षित एवं प्लेटफॉर्म टिकट की बुकिंग एक ही ऐप में।
- ट्रेन के वास्तविक समय, लाइव लोकेशन एवं आगमन-प्रस्थान की जानकारी।
- पीएनआर स्टेटस एवं कोच पोजिशन की सुविधा।
- 'माई बुकिंग्स' में सभी टिकटों का रिकॉर्ड एक जगह।
- यात्रा के दौरान भोजन बुकिंग की सुविधा।
- पार्सल एवं फ्रेट ट्रैकिंग की आधुनिक प्रणाली।
- 'रेल मदद' से शिकायत एवं सुझाव दर्ज करने की सुविधा।
- एम-पिन एवं बायोमेट्रिक (फिंगरप्रिंट/फेस आईडी) लॉगिन विकल्प।
- सभी आयु वर्ग के लिए सरल एवं उपयोगकर्ता अनुकूल इंटरफ़ेस।

रेलवन ऐप के प्रमुख लाभ :

- सभी सेवाएँ एक मंच पर उपलब्ध।
- मोबाइल स्टोरेज की बचत।
- तेज़, सहज एवं पर्यावरण अनुकूल डिजिटल सेवा।
- पुराने अकाउंट से लॉगिन पर पुरानी बुकिंग एवं डेटा का स्वतः समावेश।
- बेहतर यात्री अनुभव एवं परेशानी मुक्त यात्रा।

अहमदाबाद मंडल यात्रियों से अपील करता है कि वे अपनी यात्रा को अधिक सुविधाजनक, सुरक्षित एवं आधुनिक बनाने के लिए रेलवन ऐप का अधिकाधिक उपयोग करें। यात्री रेलवन ऐप को गूगल प्ले स्टोर या एप्पल ऐप स्टोर से आसानी से डाउनलोड कर सकते हैं और डिजिटल यात्रा का लाभ उठा सकते हैं।

पश्चिम रेलवे ने ईएमयू और ट्रैक्शन रखरखाव में महिला शक्ति को आगे बढ़ाया

(जीएनएस)। शहर की रफ़्तार के पीछे समर्पित महिलाएँ: पश्चिम रेलवे की महिला टीम कारशेड में ईएमयू रेक्स के महत्वपूर्ण रखरखाव कार्य सूक्ष्मता और समर्पण के साथ करती हैं, जिससे सुरक्षित परिचालन सुनिश्चित होता है। पश्चिम रेलवे मुंबई के उपनगरीय रेल नेटवर्क को सुरक्षित और कुशलतापूर्वक चलाने के लिए महत्वपूर्ण तकनीकी भूमिकाओं में महिलाओं को सशक्त बनाकर मानदंडों को पुनर्परिभाषित और समावेशिता को बढ़ावा दे रही है। अत्याधुनिक ईएमयू रेकों के रखरखाव से लेकर हाई-वोल्टेज ट्रैक्शन प्रणालियों के प्रबंधन तक, महिला तकनीशियन उन भूमिकाओं में कदम रख रही हैं, जिन्हें कभी पुरुषों का क्षेत्र माना जाता था और यह साबित कर रही हैं कि विशेषज्ञता और समर्पण लिंग-भेद से परे हैं। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मुंबई सेंट्रल, कांदिवली और विरार में स्थित ईएमयू कारशेड मुंबई की जीवन रेखा के रखरखाव की रीढ़ हैं। ये कारशेड यातायात की माँग के अनुसार ईएमयू रेकों के सुरक्षित और विश्वसनीय संचालन को सुनिश्चित करने के लिए चौबीसों घंटे संचालित होते हैं, जहाँ 112 रेकों पर अनुसूचित और अनिर्धारित दोनों तरह के रखरखाव किए जाते हैं। अत्याधुनिक 3-फेज एसी (25 केवी अल्टरनेटिंग करंट) तकनीक वाले ये रेक क्रमशः 60 और 240 दिनों के अंतराल पर दो प्रमुख रखरखाव अनुसूचियों, आईए और आईसी, से

गुजरते हैं। इन अनुसूचियों के दौरान कुल 45 गतिविधियाँ की जाती हैं, जिनमें से तीन प्रमुख कार्यों में सुरक्षा मंजूरी का मापन, तेल लगाना और बैटरी जाँच शामिल हैं। इन प्रमुख केंद्रों पर समर्पित महिला टीमों की तैनाती एक उल्लेखनीय विशेषता है। मुंबई सेंट्रल, कांदिवली और विरार स्थित ईएमयू कारशेड में तैनात लगभग 100 महिला तकनीशियनों और पर्यवेक्षकों को ये महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं। ये टीमें सुनिश्चित करती हैं कि सभी सुरक्षा मानदंड आरडीएसओ द्वारा निर्धारित अनुमेय सीमाओं के भीतर हों और ल्यूब्रिकेंट एवं बैटरी संबंधी सभी गतिविधियाँ सटीकता और दक्षता के साथ संपन्न हों। कुशल, सतर्क और शून्य विफलताओं को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध, ये महिलाएँ पश्चिम रेलवे की परिचालन उत्कृष्टता की खोज का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि पश्चिम रेलवे के मुंबई उपनगरीय कर्षण (टीआरडी) विभाग ने महालक्ष्मी कर्षण सबस्टेशन पर शहर की पहली महिला-प्रधान रखरखाव टीम की स्थापना की है, जिसने लैंगिक समावेशन में एक नया मानक स्थापित किया है। रखरखाव टीमें विश्वसनीय उपनगरीय ट्रेन संचालन की रीढ़ होती हैं क्योंकि ये टीमें एसी कर्षण प्रणाली में बिजली आपूर्ति प्रतिष्ठानों के निर्बाध संचालन को सुनिश्चित करती हैं। इस महिला-प्रधान इकाई ने सबस्टेशन पर 25 केवी और 110 केवी उपकरणों के प्रबंधन और रखरखाव के लिए गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया है और अब इसे सुरक्षा प्रोटोकॉल का कड़ाई से पालन करते हुए स्वतंत्र रूप से काम करने के लिए आधिकारिक तौर पर तैनात किया गया है। यह अभूतपूर्व पहल बदलती सामाजिक गतिशीलता को रेखांकित करती है। इस टीम का गठन न केवल पश्चिम रेलवे के लिए एक मील का पत्थर है, बल्कि तकनीकी और परिचालन क्षेत्रों में विविधता के प्रति इसकी प्रगतिशील दृष्टि और प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे की भूमिकाओं में महिलाओं को नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाकर, पश्चिम रेलवे परिवर्तन को प्रेरित करता है और एक अधिक समावेशी भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है।

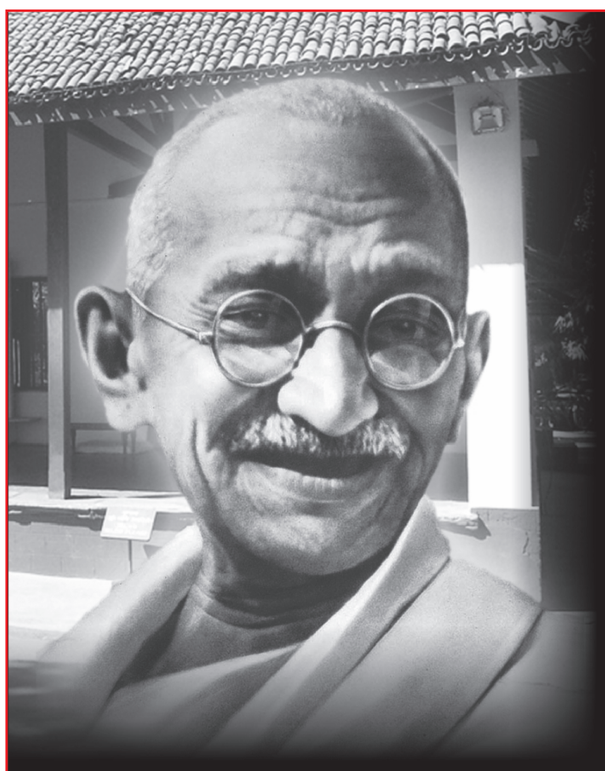

દારૂથી આત્માનો નાશ થાય છે. દારૂની લતથી ગાંડપણ, વ્યાભિચાર, જુગાર વગેરે જેવી બદીઓનો શિકાર બનાય છે. જો આપણે કોઈને દારૂની ખરાબ લત છોડાવીએ તો તેને જેલમાંથી મુક્ત કરાવ્યા જેવું છે. માણસને દારૂની બિલકુલ જરૂર નથી. એ જગજાહેર છે. દારૂડિયો સંયમ ન રાખી શકે તેનાથી કોણ અજાણ છે? તેથી, મને આશા છે કે વિવેકથી, જોર-જુલમ કર્યા વિના, સમજપૂર્વક 'દારૂનું વ્યસન છોડાવવાનો પ્રયત્ન દરેક વ્યક્તિ કરે.'

-મહાત્મા ગાંધી

નિયામક, નશાબંધી અને આબકારી, ગુજરાત રાજ્ય

તા. ૦૨-૧૦-૨૦૨૫ થી તા. ૦૮-૧૦-૨૦૨૫ સુધી નશાબંધી સપ્તાહની ઉજવણી કરે છે.

સત્યમેવ જયતે ગુજરાત સરકાર | હર ઘર સ્વદેશી ઘર ઘર સ્વદેશી

સંદેશો

સત્યમેવ જયતે

મુઝે યહ જાનકર ખુશી હો રહી હૈ કિ ગુજરાત સરકાર દ્વારા ઇસ વર્ષ ગાંધી જયંતી, **૨ અક્ટૂબર સે "મદ્ય નિષેધ સપ્તાહ"** મનાયા જા રહા હૈ।

ગુજરાત કી મદ્ય નિષેધ નીતિ મહાત્મા ગાંધી કે આદર્શો ઔર સિદ્ધાંતો પર આધારિત હૈ। સમાજ કો નશા-મુક્ત ઔર સ્વસ્થ બનાને કી યહ પ્રતિબદ્ધતા હમારે સંવિધાન દ્વારા નિર્દેશિત માદક પેયોં કે ઉપયોગ કા પ્રતિષેધ કરને કે પ્રાવધાન મેં ભી સ્પષ્ટ રુપ સે ઉલ્લેખિત હૈ।યહ **"મદ્ય નિષેધ સપ્તાહ"** હમારે સમાજ મેં નશા-મુક્તિ, આત્મસંયમ ઔર સામાજિક ઉત્તરદાયિત્વ કે મહત્વ કો રેખાંકિત કરને કા એક મહત્વપૂર્ણ અવસર હૈ, જો હમેં એક સ્વસ્થ ઔર સમૃદ્ધ સમાજ કી દિશા મેં આગે બઢને કે લિએ પ્રેરિત કરેગા। મૈં સભી નાગરિકોં, વિશેષકર યુવાઓં સે આગ્રહ કરતી હૂં કિ વે હમેશા નશે સે દૂર રહેં ઔર દૂસરોં કો ભી ઇસકે લિએ પ્રેરિત કરેં, તાકિ હમ એક સ્વાસ્થ્ય-યુક્ત ઔર નશા- મુક્ત સમાજ કા નિર્માણ કર સકેં।

મૈં ગુજરાત સરકાર ઔર ઇસ અભિયાન સે જુડે સભી લોગોં કો સાધુવાદ દેતી હૂં તથા **"મદ્ય નિષેધ સપ્તાહ"** કે લક્ષ્યોં કો પ્રાપ્ત કરને મેં સફલતા કી કામના કરતી હૂં।

શ્રીમતી દ્રૌપદી મુર્મુ
રાષ્ટ્રપતિ, ભારત

સત્યમેવ જયતે

ગુજરાત સરકાર દ્વારા **૦૨-૦૮ ઓક્ટોબર, ૨૦૨૫ દરમિયાન 'નશાબંધી સપ્તાહ'** મનાવાઇ રહ્યું છે તે સ્તુત્ય પગલું છે.

મહાત્મા ગાંધીના સિદ્ધાંતોને સમર્પિત ગુજરાત રાજ્ય આરંભથી જ સંપૂર્ણ નશાબંધીની નીતિ પર ચાલતું આવ્યું છે. ગુજરાતી પ્રજાની સુખાકારી, સામાજિક સુરક્ષા અને આર્થિક સમૃદ્ધિના ફળદાયી પરિણામ પાછળ નશાબંધી એક મોટું પરિબળ છે.

ગુજરાત સરકાર દ્વારા આરંભાયેલી **નશાબંધી ઝુંબેશ** વધુ અસરકારક નીવડે એવી શુભકામના.

નરેન્દ્રભાઈ મોદી
વડાપ્રધાનશ્રી, ભારત

સત્યમેવ જયતે

મહાત્મા ગાંધીજીના આદર્શોથી પ્રેરિત નશાબંધીની નીતિ ગુજરાત રાજ્યની સામાજિક અને નૈતિક પરંપરાનું પ્રતિબિંબ છે. આ માત્ર કાયદાકીય વ્યવસ્થા નથી, પરંતુ નાગરિકોના સુખ-સમૃદ્ધિ, આરોગ્યનું રક્ષણ અને સમાજના નબળા વર્ગોના કલ્યાણ માટેની નૈતિક પ્રતિબદ્ધતા છે.

૨ થી ૮ ઓક્ટોબર, ૨૦૨૫ દરમિયાન ઉજવવામાં આવનાર નશાબંધી સપ્તાહ ગાંધીજીના મૂલ્યોને યાદ કરવાની વધુ એક સુંદર તક છે. આ અભિયાનને સફળ બનાવવા માટે નાગરિકોની સહભાગિતા અને જનજાગૃતિ અત્યંત આવશ્યક છે.

આ અવસરે **હું ગુજરાત સરકાર અને રાજ્યના તમામ નાગરિકોને હાર્દિક શુભેચ્છાઓ પાઠવું છું.** આ અભિયાનથી સમાજમાં વધુ સ્વસ્થ, સુમેળસભર અને મૂલ્ય આધારિત જીવન માટે સૌને પ્રેરણા મળે તેવી મારી શુભકામનાઓ.

આચાર્ય દેવવ્રત
રાજ્યપાલશ્રી, ગુજરાત રાજ્ય

સત્યમેવ જયતે

સમાજમાં એક નજર કરીએ તો જોઈ શકાય છે કે સ્વ-પ્રસન્નતા માટે શરૂ કરવામાં આવેલું વ્યસન અનેક વિપરિત પરિણામોનું કારક બની રહે છે. ઘણા લોકો વ્યસનને વ્યક્તિગત નબળાઈની સમસ્યા માને છે. પૂરતી ઇચ્છાશક્તિના અભાવને કારણે વ્યસન પર નિયંત્રણ લાવવું કઠિન બને છે. વ્યસનનો અતિરેક વ્યક્તિના માનસ, વ્યવહારિક જીવન અને સંબંધો પર ગંભીર અસર પહોંચાડી શકે છે. **રાષ્ટ્રપિતા મહાત્મા ગાંધીએ ભારત ભ્રમણ કર્યું તે સમયે તેમણે પ્રજાની વ્યથાને અનુભવી અને દેશના નાગરિકો સ્વચ્છતા, સાદગી અને નશામુક્તિના માર્ગ તરફ વળે એ માટે હાકલ પણ કરી હતી. નાગરિકો સ્વચ્છતા જાળવે અને સાથે સાથે વ્યસનથી પણ દૂર રહે તેનો આગ્રહ માનનીય વડાપ્રધાન શ્રી નરેન્દ્રભાઈ મોદી પણ હંમેશાં રાખતા આવ્યા છે.**

ગુજરાતની સ્થાપનાથી જ રાજ્યમાં નશાબંધી-દારૂબંધીનો કડક અમલ અસ્તિત્વમાં છે. ગાંધીજીનું ગુજરાત નશા-દારૂની બદીથી મુક્ત રહે એવા પ્રયાસો અને કાયદાકીય અમલ કરાય તે આવકાર્ય છે. **નશાબંધી અને આબકારી ખાતા દ્વારા મહાત્મા ગાંધીના જન્મદિન તા. ૨ ઓક્ટોબરથી તા. ૮ ઓક્ટોબર સુધી "નશાબંધી સપ્તાહ"ની ઉજવણી કરવામાં આવી રહી છે,** તેનું આયોજન અભિનંદનીય છે. ગુજરાતમાં નશામુક્ત અને તંદુરસ્ત સમાજના નિર્માણ સાથે વિકાસની વાટને વધુ બળવત્તર બનાવવા સરકાર અને સામાજિક સંસ્થાઓના પ્રયાસોને બહોળી સફળતા મળે એવી શુભકામના સાથે કાર્યક્રમમાં સહભાગી સર્વે હિતધારકોને અભિનંદન.

ભૂપેન્દ્રભાઈ પટેલ
મુખ્યમંત્રીશ્રી, ગુજરાત રાજ્ય

સત્યમેવ જયતે

વ્યસન એ સમાજ માટે એક એવી ગંભીર સમસ્યા છે, જે દેશના યુવાધન અને પરિવારોને ખૂબ મોટું નુકસાન પહોંચાડે છે. આ પડકારને પહોંચી વળવા માટે, **નશાબંધી અને આબકારી વિભાગ દ્વારા દર વર્ષે યોજાતો નશાબંધી સપ્તાહ એક અત્યંત પ્રેરણાદાયક અને મહત્વપૂર્ણ પહેલ છે.**

મને એ જાણીને ખૂબ જ આનંદ થયો છે કે નશાબંધી સપ્તાહ દરમિયાન આપના વિભાગે સમાજમાં નશાબંધી પ્રત્યે જાગૃતિ લાવવા માટે વિવિધ કાર્યક્રમોનું આયોજન કર્યું છે. ખાસ કરીને, **"નશામુક્ત ભારત અભિયાન"** અંતર્ગત કરવામાં આવેલા પ્રયાસો પ્રશંસનીય છે. આ પ્રકારના કાર્યક્રમોથી સમાજમાં સકારાત્મક પરિવર્તન આવશે અને યુવાનો વ્યસનમુક્તિ માટે પ્રેરિત થશે.

હું આશા રાખું છું કે આપના વિભાગના નિષ્ઠાવાન પ્રયાસોથી આપણે સૌ એક સ્વસ્થ, તંદુરસ્ત અને વ્યસનમુક્ત સમાજનું નિર્માણ કરી શકીશું.

આપની સમગ્ર ટીમની મહેનત અને સમર્પણ બદલ હું હૃદયપૂર્વક આભાર વ્યક્ત કરું છું અને ભવિષ્યના આવા તમામ પ્રયાસો માટે મારી શુભેચ્છાઓ પાઠવું છું.

હર્ષભાઈ સંઘવી
રાજ્યકક્ષાના ગૃહમંત્રીશ્રી, ગુજરાત રાજ્ય

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

स्वभाव स्वच्छता - संस्कार स्वच्छता

स्वदेशी का व्रत इस युग का महा व्रत है

- महात्मा गांधी

महात्मा गांधीजी की जन्म जयन्ती के अवसर पर शत्-शत् नमन

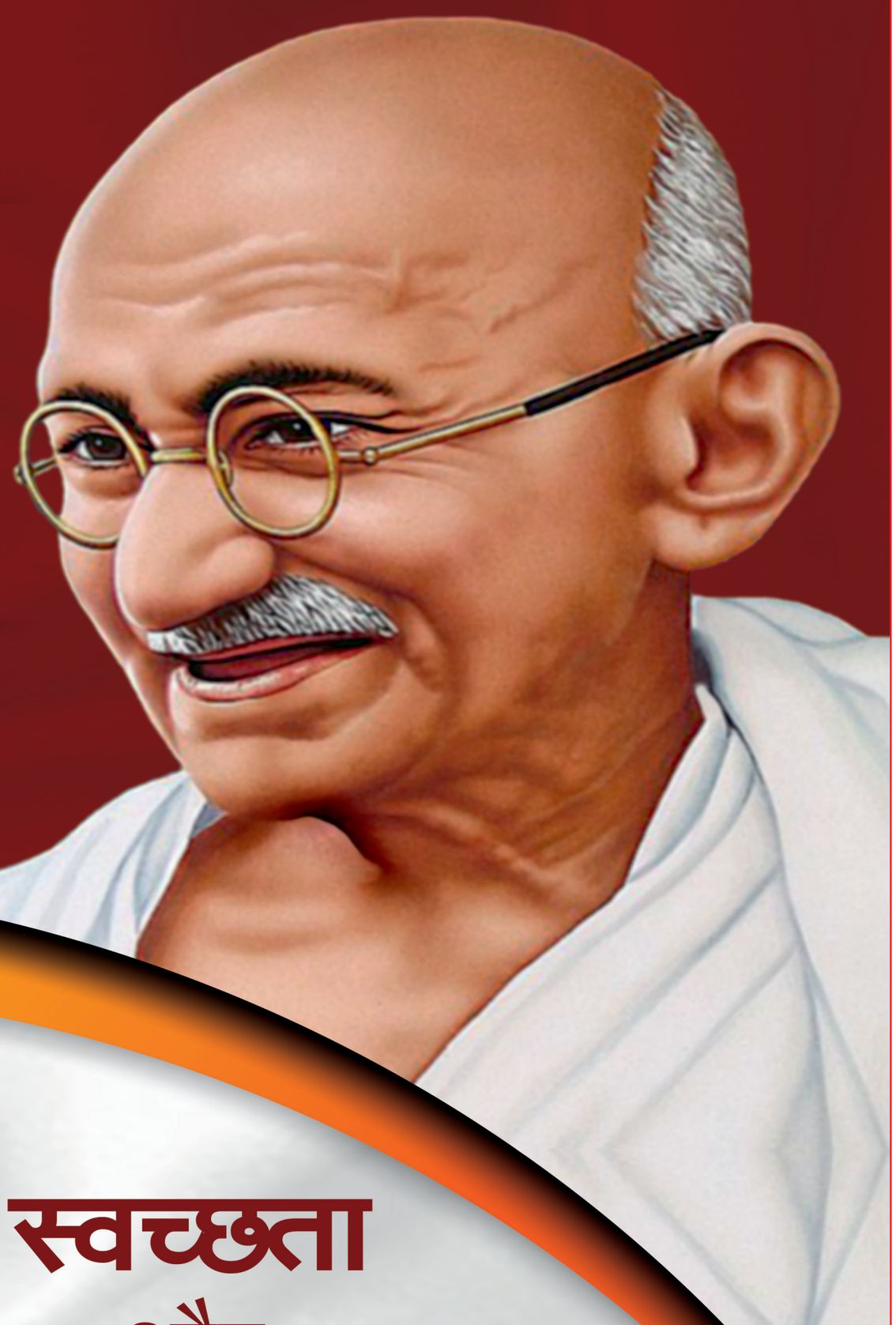

स्वच्छता और स्वदेशी को अपनाएं

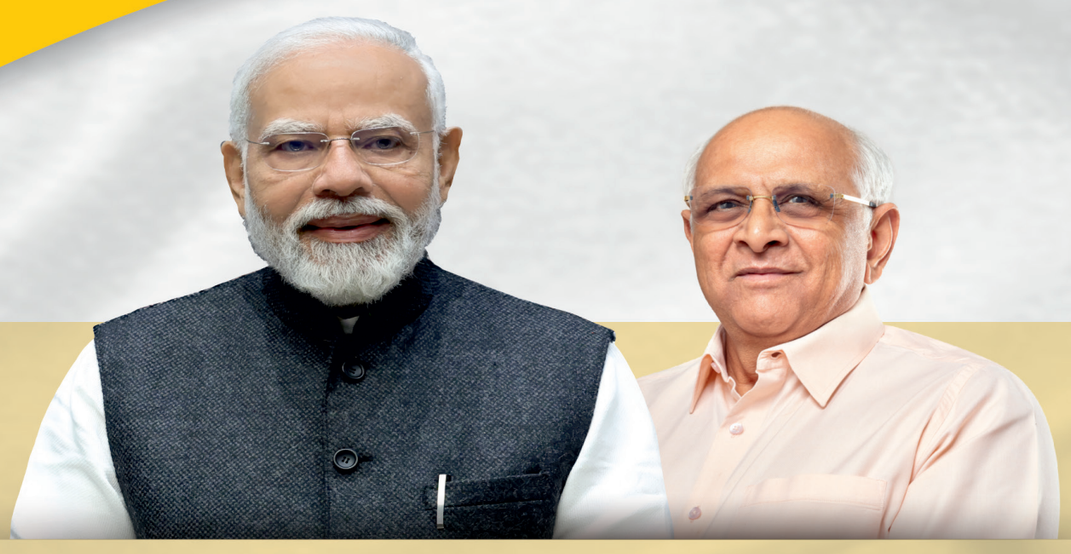

"भारत के लोगों की मेहनत और कौशल से बनी **'मेड इन इंडिया'** वस्तुएं खरीदने का संकल्प करें।"

- श्री नरेन्द्रभाई मोदी, माननीय प्रधानमंत्री

: गरिमामयी उपस्थिति :

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल

माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

राष्ट्रपिता **पूज्य महात्मा गांधीजी** की जन्म जयन्ती के अवसर पर

सर्वधर्म प्रार्थना सभा

तिथिः २ अक्टूबर २०२५, गुरुवार
समयः प्रातः ८:०० बजे
स्थानः कीर्तिमंदिर, पोरबंदर

गांधी जयंती के अवसर पर, ३१ दिसंबर २०२५ तक गुजरात में उत्पादित **खादी** और **पॉलीवस्त्र** की बिक्री पर **विशेष छूट दी** जाएगी

खादी ग्रामोद्योग से जुड़े परिवारों को मिलेगी निरंतर **रोजगार की सुनिश्चितता**

हर घर स्वदेशी घर-घर स्वदेशी